# हज़रत इमाम हसन मुजतबा (अ0)

**आयतुल्लाह सै0 मुहम्मद हुसैन तबातबाई**
**अनुवादक : काज़िम महदी नगरौरी**

हज़रत इमाम हसने मुजतबा (अ0) दूसरे इमाम थे। आप और आपके भाई हज़रत इमामे हुसैन अलैहिस्सलाम अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली (अ0) और पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की बेटी जनाबे फ़ातिमा ज़हरा (स0) के बेटे थे। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने बार–बार कहा ''हसन (अ0) और हुसैन (अ0) मेरे बच्चे हैं।'' इस वजह से हज़रत अली (अ0) भी उसी तरह अपने दूसरे बेटों से कहा करते थे, ''तुम मेरे बच्चे हो और हसन (अ0) और हुसैन (अ0) पैग़म्बरे इस्लाम के बच्चे हैं।''

(मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब जिल्द–4 पेज–21 व 26)

हज़रत इमामे हसन (अ0) 3 हि0 में मदीना मुनव्वरा में पैदा हुए।

(तज़किरतुल ख़वास पेज–193)

और उनकी ज़िन्दगी के तक़रीबन सात साल पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की बरकत वाली सोहबत में गुज़रे और वह उनकी निगरानी में पले–बढ़े। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की वफ़ात के बाद जो हज़रत फ़ातिमा ज़हरा की वफ़ात से 3 महीने या कुछ तारीख़ लिखने वालों के मुताबिक़ छः महीने से ज़्यादा पहले नहीं हुई थी, हज़रत इमामे हसन (अ0) पूरी तरह से हज़रत अली (अ0) की निगरानी में आ गए। अपने बुज़ुर्ग बाप के इन्तेक़ाल के बाद अल्लाह के हुक्म और अपने बाप की चाहत के मुताबिक़ हज़रत इमाम हसन (अ0) दूसरे इमाम मुक़र्रर हुए। आप तक़रीबन छः महीने ज़ाहिरी ख़लीफा भी रहे जिसके दौरान आप मुसलमानों के मामलों के निगराँ रहे। इसी बीच मुआविया ने जो कि हज़रत अली (अ0) और उनके ख़ानदान का जानी दुश्मन था और ख़िलाफत को हासिल करने के लिए सालों से आमने–सामने था और शुरु में तीसरे ख़लीफा के क़त्ल के बदले का बहाना बनाकर और बाद में खुलेआम ख़िलाफत का दावेदार बनकर इमाम हसन (अ0) की ख़िलाफत पर क़ब्ज़ा करने के लिए अपनी फ़ौजों के साथ इराक़ पर चढ़ाई कर दी जंग चलती रही जिसके दरमियान मुआविया ने काफ़ी रक़म देकर हज़रत इमाम हसन (अ0) के कमाण्डरों और फौजी अफ़सरों को फेर दिया और उन्हें सब्ज़ बाग़ दिखाए जिसके नतीजे में फ़ौज ने हज़रत इमाम हसन (अ0) के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी।

(इरशाद पेज–172)

बाद में हज़रत इमाम हसन (अ0) पर ज़ोर डाला गया कि वह सुलह कर लें और इस शर्त पर कि ख़िलाफत मुआविया को सौंप दें कि मुआविया के इन्तेक़ाल के बाद ख़िलाफत फिर उन्हें वापस कर दी जाएगी। और यह कि हज़रत इमाम हसन (अ0) के ख़ानदान के लोग और उनके मददगारों की हर हाल में हिफ़ाज़त की जाएगी। (इरशाद पेज–172)

इस तरह से मुआविया ने इस्लामी ख़िलाफत पर क़ब्ज़ा जमा लिया और इराक़ में दाख़िल हो गया। एक आम जलसे में उसने सरकारी तौर पर तमाम सुलह की शर्तों को ख़त्म कर दिया। (इरशाद पेज–173)

और उसकी पैरवी के लिए हर तरह से हज़रत इमाम हसन (अ0) के ख़ानदान के लोगों और उनके साथियों पर दबाव डाला। अपनी इमामत के दस सालों के दौरान आपने अपनी ज़िन्दगी सख़्त परेशानियों और तकलीफ़ों के बीच गुज़ारी जिसमें उनके घर पर भी कोई हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम नहीं था। तारीख़ लिखने वालों के मुताबिक़ 50 हि0 में मुआविया की तहरीक पर आपकी एक बीवी के ज़रिए ज़हर देकर आपको शहीद कर दिया गया। (इरशाद पेज–174)

कामिल इन्सान की हैसियत से हज़रत इमाम हसन (अ0) अपने बुजुर्ग बाप और अपने नाना का मुकम्मल नमूना थे। हक़ीक़त में जब तक पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ज़िन्दा रहे, आप और आपके भाई हमेशा रसूल (स0) की सोहबत में रहे। आप (स0) उन दोनों को कभी–कभी अपने काँधों पर बिठाते थे। सुन्नी और शीआ दोनों उलमा ने हज़रत इमामे हसन (अ0) और हज़रत इमामे हुसैन (अ0) के बारे में पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की इस हदीस को नक़ल किया है :

''मेरे यह दोनो बेटे इमाम हैं चाहे वह क़याम करें या बैठ जाएँ।'' (यानी चाहे वह ज़ाहरी ख़िलाफत पर बैठें या न बैठें)

इस हक़ीक़त के बारे में पैग़म्बरे इस्लाम (स0) और हज़रत अली अलैहिस्सलाम की बेशुमार रिवायतें हैं कि अपने बुजुर्ग बाप के बाद हज़रत इमाम हसन (अ0) इमामत की कुर्सी पर जलवाअफरोज़ होंगे। □□□

---

## (बक़िया..........................वफ़ाते सरवरे दो आलम स0)

बेटी! तुमहारा बाप आज के बाद फिर बेचैन न होगा। अब वफात का वक़्त क़रीब आ रहा था इतने में लबे मुबारक हिले तो लोगों ने आपको फरमाते हुए सुनाः ''अस्सलातु वमा मलकत अइमानुकुम'' मतलब यह था कि नमाज़ की हमेशा पाबन्दी करना और ग़ुलामों और कनीज़ों के हक़ का ख़याल रखना। चादर कभी अपने मुबारक चेहरे पर डालते थे और कभी हटा देते थे। फिर उंगली से इशारा किया और फरमायाः ''बलिररफीकुल अअ्ला'' यानी अब सिर्फ वह बड़ा और अज़ीम रफीक़ दरकार है। यह कहते–कहते नज़ा की हालत शुरु हो गयी और मुबारक रूह आलमे कुद्स की तरफ रवाना हो गयी।

शोहरत इसी की है कि पीर के दिन आँ–हज़रत ने 63 साल की उम्र में वफात पायी और मंगल का दिन गुज़र कर बुध की रात में दफन हुए।

हज़रत अली (अ0) ने बनी हाशिम में से हज़रत अब्बास रज़ि0 और उनके दोनो बेटों के साथ मिलकर गुस्ल दिया और उसामा बिन ज़ैद बिन हारसा और शुक़रान, 'हुजूर (स0) के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम' भी गुस्ल देने के काम में शरीक थे इन ही लोगों की मदद से हज़रत अली (अ0) ने तदफीन के फराएज़ अन्जाम दिए।

अल्लाह उस पाक रूह के सदक़े में मुसलमानों पर रहम फरमाए जिसने तमाम दुनिया को अपने नूरे हिदायत से रौशन और मुनव्वर कर दिया। और तमाम मुसलमानों को इसकी तौफीक़ दे कि वह हुज़ूर नबी करीम (स0) की पाक सीरत पर अमल करके ख़ुदा की मदद और आपकी पाक रूह की रज़ामन्दी से दुनिया और आख़िरत की कामयाबी और नजात हासिल करें। आमीन!

□□□